eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

आधुनिक भारत में पंडित गोविंद बल्लभ पंत जी की शिक्षा संबंधी अवधारणाओं की प्रासंगिकता

पूजा[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधकत्री, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

पंडित गोविंद बल्लभ पंत आधुनिक भारत के प्रमुख राष्ट्रनायकों और समाज सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंत जी का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक न्याय और आर्थिक प्रगति की आधारशिला है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ और अनिवार्य बनाने, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने तथा स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनका दृष्टिकोण यह था कि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर, जागरूक और राष्ट्रहितैषी नागरिक बनाती है। वर्तमान भारत में जब शिक्षा को कौशल विकास, डिजिटलाइजेशन और रोजगारपरक बनाने पर जोर दिया जा रहा है, तब पंत जी की शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। यह शोधपत्र पंत जी की शिक्षा संबंधी विचारधारा का विश्लेषण करते हुए उनकी वर्तमान समय में उपयोगिता और महत्व को स्पष्ट करता है।

कीवर्ड्स– पंडित गोविंद बल्लभ पंत, शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ, आधुनिक भारत, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, मातृभाषा आधारित शिक्षा, सामाजिक न्याय, कौशल विकास

Introduction

पन्त जी न केवल स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और राजनता थे, बल्कि उन्होने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए, जिनकी प्रासंगिकता आज भी आधुनिक भारत में बनी हुई है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं था बल्कि यह एक वैश्विक क्रांति भी थी जिसमें शिक्षा संस्कृत भाषा और सामाजिक चेतना की भूमिका प्रमुख रही है इसी चेतना के प्रेरक स्रोतों में एक महान व्यक्ति थे पंडित गोविंद बल्लभ पंत जिन्होंने न केवल भारत की आजादी में आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में शिक्षा के माध्यम से नैतिक सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों के स्थापित करने का प्रयास किया पंत जी का विश्वास था कि केवल ज्ञान का संरक्षण नहीं बल्कि चरित्र का निर्माण का माध्यम है और भारतीयता नैतिकता तथा मातृभाषा के प्रति जागरूकता इसमें मूल रूप से समाहित होनी चाहिए आज जब आधुनिक भारत शिक्षा को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन चुनौतियों से गुजर रहा है पंत जी के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं इन शोध रिपोर्ट में हम पंडित गोविंद बल्लभ पंत के शिक्षा संबंधी विचारों उनके ऐतिहासिक सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में समझाने का प्रयास करेंगे और यह विश्लेषण करेंगे कि उनकी शिक्षा अवधारणाएं आज के समय में किस प्रकार मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है उनकी शिक्षा संबंधी अवधारणा आज भी प्रासंगिक व विशेष विश्लेषण उसे समय जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था की नई चुनौतियां जैसेडिफाइनिंग विभाजन रोजगार हैं शिक्षा नैतिक मूल्यों के पतन आदि का सामना कर रही है उनकी शिक्षा संबंधी अवधारणा आज के भारतीय समाज और शिक्षा तंत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

पंडित गोविंद बालमपुर में अल्मोड़ा जिले में अल्मोड़ा जिले के कुंड गांव में हुआ था उनकी शिक्षा पंडित 1: शिक्षित ब्राह्मण थे पंत जी का वयकाल साधारण अनुशासित और विद्या प्रिया परवेरा से बीता है वह कल से ही मेधावी और अध्ययनशील थे उन्होने प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा से प्राप्त की और आगे की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरी की जहां इन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त की वकील के रूप उन्होंने परिवार की शुरुआत हुई लेकिन जल्दी वह स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और महात्मा गांधी के प्रभाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ गए उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री के रूप में भारत के गृहमंत्री के रूप में भी कार्य किया पंडित जी एक दूरदर्शी शिक्षा विद राष्ट्रभक्ति और समाज सुधारक थे जिनका शिक्षा की वृद्धि दृष्टि को भारतीय मूल्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। पंत जी इन व्यक्तियों के में से एक है जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति के माध्यम नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण सामाजिक चेतना और आज जब आधुनिक भारत शिक्षा में सब संग्रह से जूझ रहा है जैसे नैतिक शिक्षा मातृभाषा की अपेक्षा बेरोजगारी और बाजारीकरण ऐसे पंडित गोविंद बल्लभ पंत के शिक्षा संबंधी विचार फिर से प्रासंगिक हो गए हैं।

पंत जी कि शिक्षा संबन्धी प्रमुख अवधारणाऐं–

समावेशी और लोकतांत्रिक शिक्षा– पंत जी ने शिक्षा को समाज के समाज के सभी वर्गो तक पहुँचने पर विशेष जोर दिया ज्यादातर गरीब पिछड़े और वंचित वर्गों के लिए निःशुल्क एंव अनिवार्य शिक्षा को बढावा देने पर जोर दिया । पंत जी कुमाऊँ में अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा लागु करने वाले प्रथम नेताओं मे एक थे।

नारी शिक्षा– पंत जी ने नारी शिक्षा को समाजिक सुधार का प्रमुख आधार माना विशेषकर, उन्होने नारी शिक्षा को समाज सुधार की कुंजी कहा। पंत जी का यह मानना था कि समाज का आधा हिस्सा महिलाएं है अतःउन्हें शिक्षित किए बिना राष्ट्र की उन्नति संभव नही। उन्होनें बालिका शिक्षा को बढावा दिया और बाल विवाह तथा वाल मजदूरी के विरोध मे खुलकर आवाज उठाई।

राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक शिक्षा– पंत जी मानते थे कि शिक्षा का उदेश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नही बल्कि व्यक्ति को संस्कृतिक शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना मे ओत–प्रोत करना भी होना अतिआवश्याक है। शिक्षा का एक मुख्य उदेश्य राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित करना होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा में सांस्कृतिक तत्वो को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनका मानना था कि संस्कृति केवल परम्परा नहीं बल्कि जीवन मूल्य है। उन्होंने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया व सहित्य व सांस्कृतिक विषयों का पाठयक्रम में स्थान निर्धारित किया।

व्यावसायिक एंव व्यवहारिक शिक्षा– पंत जी के शिक्षा को जीवनोपयोगी व समलोपयोगी बनाते हुए व्यावसयिक प्रशिक्षण को भी अत्यधिक महत्व दिया। इससे छात्रों मे आत्मनिर्भरता व कौशल विकास को बल मिला। उनके अनुसार व्यवहारिक शिक्षा का अर्थ है जीवनोपयोगी ज्ञान देना, जिससे छात्र वास्तविक परिस्थितियों का सामना कर सकें।

आधुनिक भारत में उनकी अवधारणाएं–

सर्व शिक्षा का लक्ष्य– पन्त जी शिक्षा को केवल अक्ष.....की शिक्षा नही मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा में नैतिक्ता सहिण्णुता व कर्तण्यन्वोध होना चहिए। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति ऐसा शिक्षित हो कि वह अपने जीवन को स्वावलंबी रूप से चला सके। पंत जी की सर्वशिक्षा की अवधारणा एक समावेशी,न्यायपूर्ण आत्मनिर्भर और राष्ट्रभक्त भारत की नीव रखती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

लिंग समानता और महिला सर्शाक्तकरण – पंत जी का मानना था कि शिक्षा ही वह मार्ग है जिससे लिंग भेद मिटाया जा सकता है। उनकी पहल पर उत्तर प्रदेश मे कन्या शिक्षा को प्रायमिकता दी। वे महिला को परिवार की अधीनस्य नहीं ,एक स्वतन्त्र नागरिक के रूप में देखने के पक्षकार थे। वर्तमान में बालिकाओं की शिक्षा व महिला जागरूकता पर जोर, बेटी बचाओ,बेटी पटाओ जैसे अभियान, पंत जी की सोच की आधुनिक आवश्यकता दर्शाते है।

राष्ट्रभाषा और संस्कृति का संरक्षण– नई शिक्षा नीति में भी भारतीय भाषओं और सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया जा रहा है,जो पंत जी की सोच की आज भी मौजूदा चुनोति उन्होंने शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति,नैतिक मूल्य,संगीत कला और इतिहास को शमिल करने पर जोर दिया।

व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशाल विकास– स्किल इंडिया जैसी योजनाएँ पंत जी के व्यावहारिक शिक्षा के सिद्धांत की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं

प्रारंभिक शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि – पंडित जी की प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। पारिवारिक वातावरण आध्यात्मिक और शिक्षा विरुद्ध था उन्होंने शिक्षा में शिक्षा को जीवन का आधार माना और इसकी सामाजिक भूमिका को गहराई से समझा उनके शिक्षक और माता–पिता में उनमें नैतिक मूल्यों की गहरी समझ विकसित की

स्वतंत्रता आंदोलन में शिक्षा का विचार– स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पंत जी ने शिक्षक शोषण के विरुद्ध हथियार के रूप में देखा उन्होंने विदेशी शिक्षा प्रणाली की आलोचना की और भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा में पुनर परिभाषित करने की मांग की उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने होना चाहिए शिक्षा के प्रति पंत जी का दृष्टिकोण पंत की शिक्षा के अलग संस्कृति और नैतिकता के साथ जोड़ने थे उनके अनुसार शिक्षण उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए विद्यार्थी में समाज के लिए उत्तरदायित्व का भाव आना चाहिए शिक्षा मंत्र भाषण में दी जानी चाहिए ताकि अधिक प्रभावित हो।

मातृभाषा राष्ट्रभाषा– और शिक्षा पंडित गोविंद बल्लभ पंत हिंदी की राष्ट्रभाषा के रूप में उनकी अनिवार्यता के पदधारी थे उनका मानता कि जब तक शिक्षा मातृभाषा में नहीं होगी तब तक ज्ञान का सही प्रचार नहीं होगा। उन्होंने कहा था यदि राष्ट्र की आत्मा को शिक्षित करना है तो वह अपनी भाषा में ही संभव है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली नैतिकता की भूमिका– आज की शिक्षा प्रणाली पंत जी के अनुसार शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा समावेश अनिवार्य है वह गुरुकुल परंपरा की पुनर्स्थापना की बात नहीं करते थे लेकिन उसमें निहित मूल्य के आधुनिक शिक्षा के लाने की बात जरूर करते थे ।

युवाओं के लिए पंडित जी का दृष्टिकोण – पंडित जी युवाओं के राज का भविष्य मानते थे उनका मानना था कि शिक्षा युवाओं में आत्म गौरव आत्मविश्वास और सेवा की भावना का संचार कर उन्हें युवाओं से आत्मनिर्भर बनने की शारीरिक श्रम से ना डरने और राष्ट्रीय एकता के प्राथमिकता देने की अपेक्षा की।

भारतीय संस्कृति और शिक्षा का संबंध शिक्षा संबंधी अभियान– पंडित जी शिक्षा संबंधी अवधारणाओं में भारतीय संस्कृति 11 प्रवाह देखा है वह शिक्षा को केवल उनके धार्मिक मानकर उसे संस्कृति और परंपरा से जोड़ने थे उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी हो जो भारतीय का दिशा कराकर ना कि पश्चात संस्कृति का अनुसरण हो।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

शिक्षा और राष्ट्र निर्माण में पंत जी का योगदान – शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता पंत जी मानते थे की शिक्षा के माध्यम से विभिन्न वर्गों में धर्म और समुदायों के बीच की दूरियां को घटकर राष्ट्र की एकता पर बोल दिया जा सकता है उन्होंने स्कूल और विश्वविद्यालय में ऐसे पाठ्यक्रमों को अनुशंसा की जिसने भारतीय इतिहास संस्कृति गौरवशाली परंपरा में स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी शामिल हो

हिंदी भाषा और शिक्षा – उनका यह भी मानना था कि जब तक शिक्षा जन्म की भाषा में नहीं होगी तब तक प्रभावशाली नहीं हो सकती उन्होंने हिंदी को राजभाषा बनाने की दिशा में कार्य किया और भारतीय भाषाओं को सर्वेक्षण के लिए शिक्षा के माध्यम बनाया पंत जी ने केवल अकादमी शिक्षा को नहीं बल्कि कौशल आधारित शिक्षा को भी महत्व दिया उनका मानना था कि विद्यार्थी को एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष– पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा संबंधी अवधारणाए आज भी शिक्षा व्यवस्था के मूल सिद्धांतों में विघमान हैं। उनका समावेशी , व्यवहारिक , राष्ट्रीय दृष्टिकोण आधुनिक भारत की शिक्षा नीति एवं सामाजिक विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जो शिक्षा की गुणवत्ता ,समानता और सामाजिक उत्थान की दिशा का मार्गदर्शन करता है। पंडित गोविंद बल्लभ पंत जी शिक्षा संबंधी अवधारणाएं में केवल उनमें युक्त प्रासंगिक थी बल्कि आज भी मार्गदर्शक हैं उन्होंने शिक्षक को समावेशी नीति संस्कृत आधारित और समाज योग मुखी बनाने की वकालत की आधुनिक भारत में जब शिक्षा को विविध पहलू उभरे आ रहे हैं तब उनके विचार एक आदर्श शैक्षिक की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं उनकी शिक्षा नीति मूल आत्मा राष्ट्रवाद सामाजिक न्याय समानता और आज के भारत में को आत्मनिर्भर जागरूक समाज बनाने की शिक्षा मार्गदर्शन समादेश हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- पंडित गोविंद बल्लभ पंत मेरे विचार नई दिल्ली । प्रकासन विभाग भारत सरकार
- Govind Ballabh Pant: A Monograph on Modern Hindi Writer
  लेखक दृशेर सिंह बिष्ट, प्रकाशन दृसाहित्य अकादेमी 2020 (यह पुस्तक हिन्दी में पंत जी के जीवन , कृतित्व और शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोणों का विवेचन करती है।
- Selected Works of Govind Ballabh Pant- संपादक– बि.आर.नंदा
  प्रकाशक ..ऑक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (यह श्रृंखला पंत जी के विचारों ,भाषणों नीतिगत टिप्णियों तथा शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोणो का विस्तृत संकलन है।
- बी0एल सक्सेना पंडित गोविंद बल्लभ पंत जीवन परिचय इलाहाबाद। हिंदी साहित्य संस्थान।
- आनंद प्रकाश भारती समाज में शिक्षा योगदान लखनऊ चेतना प्रकाशन
- भारतीय शिक्षा विदों में योगदान एन0सी0आई भारतीय प्रकाशन नई दिल्ली ।
- शिक्षा और स्वतंत्रता संग्राम भारत का संस्कार शैक्षिक अभिलेखकागार नई दिल्ली।